श्री शांतिनाथ जिन पूजा

शांति जिनेश्वर नमूँ तीर्थ वसु दुगुण ही,
पंचमचक्री अनंग दुविध षट् सुगुण ही।
तृणवत ऋद्धि सब छारि धारि तप शिववरी,
आह्वानन विधि करूं वारत्रय उच्चरी।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

शैल हेमत पतंत वापिका सुव्यौमही।
रत्नभृंगधारि नीर सीत अंग सोमही।।
रोग शोक आधि व्याधि पूजते नशाय हैं।
अंनत सौख्यसार शांतिनाथ सेय पाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।१।।

चन्दनादि कुंकुमादि गन्धसार ल्यावही।
भृंग वृन्द गूंजतैं समीरसंग ध्यावही।। रोग शोक...

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।२।।

इन्दु कुंद हारतै अपार श्वेत साल ही।
दुति खंडकार पुंज धारिये विवाल ही।। रोग शोक...

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।३।।

पंचवर्ण पुष्पसार ल्याइये मनोग्य ही।
स्वर्ण थाल धारिये मनोज नास जोग्य ही।। रोग शोक...

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।४।।

खण्ड घृत्तकार चारु सद्य मोदकादि ही।
सुष्ट मिष्ट हेमथाल धारि भव्य स्वादि ही।। रोग शोक...

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।५।।

दीप जोति को उद्योत धूम होत ना कदा।
रत्नथाल धारि भव्य मोहध्वांत हूँ विदा।। रोग शोक...

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।६।।

धूप

अगर चन्दनादि द्रव्य सार सर्वधार ही।
स्वर्ण धूप दोन में हुताश संग जार ही।। रोग शोक...

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।७।।

फल

घोटकेन श्री फलेन हेमथाल में भरैं।
जिनेश के गुणौघ गाय सर्व एनकूं हरैं।। रोग शोक...

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।८।।

अर्घ

शरद इन्दुसम अंबुतीर्थ उद्भव तटहारी।
चंदन दाह निकंद शालि शशितैं ऋति भारी।।
सुरतरु के वर कुसुम सद्य चरु पावन धारैं।
दीप रतनमय जोति धूपतैं मधु झंकारैं।।
लहि फल उत्तम करि अरघ शुभ 'रामचन्द्र' कनक थाल भरि।
श्री शान्तिनाथ के चरण जुग वसु विधि अरचैं भाव धरि।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

पंचकल्याणक

पर्वारथ सिद्धि तैं जिये, भादो सप्तमि श्याम।
ऐरादे उर अवतरे, जजूं गर्भ अभिराम।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भ मंगल मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जेठ चतुरदसि कृष्ण की, जन्मे श्री भगवान।
सनपन करि सुरपति जजे, मैं जज हूँ धरि ध्यान।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म मंगल मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

जेठ असित चउदसि धर्यो, तप तजि राज महान।
सुरनर खगपति पद जजैं, है जज हूँ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपो मंगल मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पोष शुक्ल दशमी हने, घाति कर्म दुखदाय।
केवल लहि वृष भाखियौं, जजूं शांति पद ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री पोष शुक्लदशम्यां ज्ञान मंगल मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

कृष्ण चतुरदसि जेठ की, हनि अघाति शिवथान।
गये समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान।।

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

जयमाला

शान्ति जिनेश्वर पाय, बंदू मन वच कायतैं।
देहू सुमति जिनराय, ज्यौं विनति रुचि सौं करौं।।
शान्ति करम वसु हानिकै, सिद्ध भये शिवजाय।
शान्ति करो सब लोक में, अरज यहै सुखदाय।।
शांति करो जग शांति जी।।१।।

धन्य नगरी हथनापुरी, धन्य पिता विश्वसेन।
धन्य उदर ऐरासती, शान्ति भये सुखदेन।। शान्ति...२।।

भादों सप्तमी स्यामही, गर्भ कल्याणक ठानि।
रतन धनद वरषाइयो, षट नव मास महान।। शान्ति...३।।

जेठ असित चउदश विषैं, जनम कल्याणक इन्द।
मेरु कर्यो अभिषेक कैं, पूजि नचे सुरवृन्द।। शान्ति...४।।

हेम वरन तन सोहनो, तुंग धनुष, चालीस।
आयु वरस लख नरपती, सेवत सहस बत्तीस।। शान्ति...५।।

षट खण्ड नवनिधि तिय सवै, चउदह रतन भंडार।
कछुकारण लखिकें तजे, षणचव आशिय अगार।। शान्ति...६।।

देव ऋषी सब आयकै, पूजि चले जिन बोधि।
लेय सुरां शिविका धरी, विरछ नंदीश्वर सोधि।। शान्ति...७।।

कृष्ण चतुरदसि जेठकी, मनपर जै लहि ज्ञान।
इन्द्र कल्याणक तप कर्यो, ध्यान धर्यौ भगवान।। शान्ति...८।।

षष्टम करिहित असनकै, पुर सोमनस मझार।

गये दयो पयमित्त जी, वरषे रतन अपार।। शान्ति....९।।

मौन सहित वसु दुगुण ही, बरस करे तपध्यान।
पौष शुक्ल दशमी हने, घति लह्यो प्रभुज्ञान।। शान्ति....१०।।

समवशरन धनपति रच्यो, कमलासन पर देव।
इन्द्र नराष्ट द्रव्य की, सुनिथिति थुति करिएव।। शान्ति....११।।

धन्य जुगलपद मोतनौ, आयौ तुम दरबार।
धन्य उभै चक्षु ये भये, वदन जिनंद निहारि।। शान्ति....१२।।

आज सफल कर ये भये, पूजत श्री जिन पाय।
शीस सफल अबही भयो, धोक्यो तुम प्रभु आय।। शान्ति....१३।।

आज सफल रसना भई, तुम गुणगान करंत।
धन्य भयौ हित मोतनौं, प्रभुपद ध्यान धरंत।। शान्ति....१४।।

आज सफल जुग मोतनौ, श्रवन सुनत तुम बैन।
धन्य भये वसु अंग ये, नमत लयौ अति चैन।। शान्ति....१५।।

राम कहै तुम गुणतणा, इन्द्र लहै नहि पार।
मैं मति अल्प अजान हूँ, होय नहीं विस्तार।। शान्ति....१६।।

वर्ष सहस पच्चीसही, षौडस कम उपदेश।
देय समेद पधारिये, मास रह्यो इक शेष।। शान्ति....१७।।

जेठ असित चउदसि गये, हनि अघाति शिवथान।
सुरपति उत्सव अति करे, मंगल मोक्ष कल्यान।। शान्ति....१८।।

सेवक अरज करै सुनो, है करुणानिधि देव।
दुखमय भवदधि तै मुझै, तारि करूं तुम सेव।। शान्ति....१९।।

छत्ता-छन्द

इति जिन गुणमाला, अमल रसाला जो भविजन कंठै धरई।
हुय दिवि अमरेश्वर, पुहमि नरेश्वर, शिवसुंदरि ततछिन वरई।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा। इत्याशीर्वादः